17

आदमी जो रोया

(2 राजाओं 8:7-10:36)

सुलेमान ने कहा कि ''रोने का समय, और हंसने का भी समय; छाती पीटने का समय, और नाचने का भी समय है'' (सभोपदेशक 3:4क)। आम तौर पर प्रभु अपने लोगों को प्रसन्न चाहता है (भजन संहिता 32:11; फिलिप्पियों 4:4); परन्तु कई बार दुखी होना उपयुक्त होता है (मत्ती 5:4; रोमियों 12:15)। वास्तव में कई बार ऐसे समय होते हैं जब प्रसन्न होना अनुपयुक्त होता है।

यिर्मयाह परमेश्वर के लोगों के पापी होने और उसके परिणाम में यरूशलेम के विनाश पर रोया था (यिर्मयाह 9:1; विलापगीत)। यीशु एक मित्र के मरने पर रोया (यूहन्ना 11:35) जब उसने यरूशलेम के भविष्य पर ध्यान किया (लूका 19:41-44) और जब क्रूस का सामना किया (इब्रानियों 5:7)। पौलुस ने कुरिन्थुस के लोगों को ''बहुत से आंसू बहा बहाकर तुम्हें लिखा'' (2 कुरिन्थियों 2:4)। इस प्रस्तुति के लिए वचन पाठ में हम पढ़ते हैं, ''और परमेश्वर का भक्त रोने लगा'' (2 राजाओं 8:11ख)। इस पाठ में हम एलीशा के दूरगामी प्रभाव को देखेंगे: यानी यह कि वह राजनैतिक शक्ति वाला व्यक्ति था जिसने दो देशा में राजा बनाने का काम किया। परन्तु उस त्रासदी की तुलना में जो इस्राएल पर पड़ने वाली थी नबी के लिए यह कुछ भी नहीं था (आयत 12)। उसके सब प्रयासों के बावजूद देश पर उसके अगुओं ने परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह जारी रखा और उस बात ने उसका दिल तोड़ दिया।

यह अध्ययन 2 राजाओं 8-10 से लिया गया है, यानी उन अध्ययन से जिनमें एलीशा की सेवकाई के पिछले भाग में से अधिकतर को शामिल किया गया है। उन घटनाओं से भरपूर जो किसी भी कोमल हृदय व्यक्ति को रुला दें, इस्राएल के इतिहास में यह लहूलुहान काल था।

न्याय की दो तलवारें (8:7-10:36)

अजाएल की तलवार

कहानी का आरम्भ इन आश्चर्यजनक शब्दों के साथ होता है: ''और एलीशा दमिश्क को गया'' (8:7क)। दमिश्क अराम की राजधानी था, जो लम्बे समय से इस्राएल का शत्रु था। एलीशा को पकड़ने और शायद उसकी हत्या की योजनाएं दमिश्क में ही बनी थीं (देखें 6:8-13)। अब यह नबी खुलेआम महानगर में घूम रहा था।

वह वहां क्यों था? शायद उसे उस निर्णय में विश्वासयोग्य बने रहने में जो नामान में लिया था उसे प्रोत्साहित करने के लिए उससे भेंट करने की उम्मीद की (5:15, 17)। पर उसका मुख्य उद्देश्य बहुत पहले दी गई ईश्वरीय आज्ञाओं को पूरा करना था। होरेब पहाड़ पर प्रभु ने एलीशा

के पूर्वाधिकारी एलिय्याह को बताया:

> ... लौटकर दमिश्क के जंगल को जा, और वहां पहुंचकर अराम का राजा होने के लिये हजाएल का, और इस्राएल का राजा होने को निमशी के पोते येहू का, और अपने स्थान पर नबी होने के लिये आबेलमहोला के चापात के पुत्र एलीशा का अभिषेक करना। और हजाएल की तलवार से जो कोई बच जाए उसको येहू मार डालेगा; और जो कोई येहू की तलवार से बच जाए उसको एलीशा मार डालेगा (1 राजाओं 19:15-17)।

अपनी शृंखला के पहले पाठ में हम ने एलिय्याह को इस आज्ञा का तीसरा भाग यानी पवित्र सेवा के लिए एलीशा को ठहराते हुए देखा था। एलिय्याह ने पहला और दूसरा भाग तुरन्त क्यों पूरा नहीं किया? स्पष्टतया उसकी सेवकाई के दौरान, अज़ाएल या येहू का अभिषेक करने का सही समय नहीं था जिस कारण यह काम एलीशा को सौंपे गए थे। पहली आज्ञा थी कि ''दमिश्क के जंगल को जा, और ... हजाएल का ... अभिषेक करना'' (1 राजाओं 19:15)। समय आ गया था कि उस आदेश को पूरा किया जाए, इस कारण एलीशा दमिश्क में गया।

ऐसा हुआ कि ''अराम का राजा बेन्हदद रोगी था'' (2 राजाओं 8:7ख)। यह नहीं बताया गया कि उसे रोग क्या था। जो भी रोग था यह गम्भीर था यानी जानलेवा।

एक दूत ने राजा को सूचित किया, ''परमेश्वर का भक्त यहां भी आया है'' (8:7ग)। पहले, राजा ने कहा होगा, ''एलीशा को पकड़ लो और उसका सुर मुझे लाकर दो!'' परन्तु अब वह युद्ध की योजनाओं के लिए चिंतित शूरवीर सेनापति नहीं था। अब वह बीमार और बूढ़ा आदमी था। बिमारी व्यक्ति के दृष्टिकोण को बदल सकती है (देखें भजन संहिता 119:71)।

एलीशा की आश्चर्यकर्म करने की योग्यताएं इस राजा को मालूम थीं; कालांतर में उनकी कई बार परवाह नहीं की गई थी (2 राजाओं 6:8-23)। इसके अलावा नामान ने अपनी चंगाई की कहानी कई बार सुना दी होगी। इस कारण राजा ने हजाएल नामक एक भरोसे के सहायक (वही व्यक्ति जिसका उल्लेख परमेश्वर ने एलिय्याह से किया था) नाम दिया। उसने हजाएल से कहा, ''भेंट लेकर परमेश्वर के भक्त से मिलने को जा'' (8:8क)।

पहले राजा ने नामान द्वारा प्रस्तुत करने के लिए शानदार तोहफ़े भेजे थे परन्तु अब उसने अपने तोहफ़े भेजे। सैद्धांतिक रूप में कुछ उपहार तो मूर्तियों के देवता को प्रसन्न करने के लिए थे जबकि वास्तव में वह झूठे याजकों और झूठे नबियों को रिश्वत थी क्योंकि आम तौर पर जितना बड़ा उपहार होगा उतना ही अपने पक्ष में ''प्रकाशन'' मिलता है। राजा के उपहार की बात पढ़कर मुझे आश्चर्य होता है कि नामान ने राजा को गेहजी की विनती (झूठ) बता दिया होगा, जो इस बात का संकेत है कि एलीशा ऐसे उपहारों को स्वीकार करने को तैयार होगा।

राजा ने हजाएल से यह कहते हुए कि ''क्या मैं इस बीमारी से चंगा हो जाऊंगा?'' (8:8क)। एलीशा के द्वारा ''परमेश्वर से पूछने'' के लिए कहा। सम्भवतया राजा ने अपने मूर्तियों के देवताओं से पूछा होगा (देखें 5:18) परन्तु उससे कोई संतुष्ट नहीं मिली थी।

एक अद्भुत उपहार इकट्ठा किया गया है: ''दमिश्क की सब उत्तम उत्तम वस्तुओं से चालीस ऊंट'' लदवाए गए (8:9ख)। दमिश्क, मिस्र, एशिया माइनर और मैसोपोटामिया के बीच व्यवसाय का केन्द्र था। तो ''उत्तम वस्तुएं'' सचमुच में उत्तम थी, कीमती धातु, बढ़िया

कपड़े, हाथ से बनी चीज़ें, स्वादिष्ट भोजन और पेग। इससे अधिक प्रभावशाली उपहार की कल्पना करना कठिन होगा, परन्तु ऐसा कोई संकेत नहीं है कि इसके आने पर एलीशा ने इसे स्वीकार किया।

हजाएल ने एलीशा को ढूंढ़ा (8:9क)। वह ''उसके समुख खड़ा होकर कहने लगा, 'तेरे पुत्र अराम के राजा बेन्हदद ने मुझे तुझ से यह पूछने को भेजा है, ''क्या मैं जो रोगी हूं तो बचूंगा कि नहीं?'' ' '' (8:9ग)। ''तेरे पुत्र'' का शब्द सम्मान के लिए है, पर इसका अर्थ निर्भरता भी है।

एलीशा का उत्तर विद्वानों को उलझा देता है: '' 'तू निश्चय बच सकता,'[1] तौ भी यहोवा ने मुझ पर प्रकट किया है, कि तू निसन्देह मर जाएगा'' (8:10)। एलीशा के यह कहने का क्या अर्थ है? बर्टन कॉफ़मैन ने लिखा है कि इस वाक्य का अन्तिम भाग ''यहोवा'' की ओर से माना जाता है, परन्तु पहला भाग नहीं।[2] उसका निष्कर्ष (और कई लेखकों का निष्कर्ष) है कि वाक्य का पहला भाग एलीशा के हजाएल के झूठ से परिचित होने का संकेत देता है जो राजा को बताना है। इस व्याख्या का इस्तेमाल करते हुए एलीशा के शब्दों को इस प्रकार से लिखा जा सकता है: ''तू आगे बढ़कर राजा को बता दे कि वह निश्चय ही ठीक हो जाएगा, बिल्कुल वैसे जैसे तू ने योजना बनाई थी, *परन्तु* यहोवा ने मुझे दिखाया है कि वह अवश्य मरेगा।''

एक और सम्भावना (मेरे सहित अन्य लेखकों द्वारा इसे प्राथमिकता दी जाती है) यह है कि इस प्रश्न का कि ''मैं बचूंगा कि नहीं?'' का उत्तर है ''हां और नहीं'': ''हां, तू बच जाएगा क्योंकि तेरी बीमारी खतरनाक नहीं। यदि तुझे केवल यही चिंता है, तो तू बच जाता। तौभी इसका उत्तर *नहीं* है क्योंकि यहोवा ने मुझे दिखाया है कि तू निश्चित मरेगा।'' ''अन्य शब्दों में, बीमारी अन्त नहीं है पर राजा के जीवन का अन्त निकट आ गया है।''[3]

आयत 11 में व्याख्या में एक और चुनौती मिलती है, ''वह उसकी ओर टकटकी बान्ध कर देखता रहा, यहां तक कि वह लज्जित हुआ'' (8:11क)। यह स्पष्ट नहीं है कि दो बार ''वह'' किससे कहा गया है। कइयों का मत है कि पहला ''वह'' एलीशा के लिए है जबकि दूसरा ''वह'' हजाएल के लिए। अन्य लोगों का मानना है कि पहला ''वह'' हजाएल के लिए है जबकि दूसरा ''वह'' एलिय्याह की बात कर रहा है (देखें NCV)। कई तो दोनों ''वह'' को एलीशा से या दोनों को हजाएल से जोड़ते हैं। मेरी प्राथमिकता पहली सम्भावना है। CJB में है ''फिर परमेश्वर के जन [एलीशा] में उस [हजाएल] पर इतनी देर टकटकी लगाई कि इजाएल घबरा गया।''

एक सम्भावित शृंखला यह है: एलीशा ने हजाएल को बताया कि यहोवा ने कहा है कि बेन्हदद मारा जाएगा। फिर उसने रुककर हजाएल की ओर ध्यान से देखा जो इस बात का संकेत था कि उसे मालूम था कि राजा की मृत्यु कैसे होगी। हजाएल जिसने पहले से राजा की हत्या की योजनाएं बनाई थीं, चौंक गया और नज़र में नबी को देखने से रोक नहीं पाया।

एलीशा ने बता दिया था कि राजा मर जाएगा, इस कारण कुछ लेखक उस कार्य के लिए एलीशा (और परमेश्वर) को जिम्मेदार ठहराने की कोशिश करते हैं। यह सच है कि परमेश्वर को मालूम था कि बेन्हदद मर जाएगा (8:10)। उसे उन अत्याचारों का भी पता था जो हजाएल ने करने थे (8:12), पर उसने एलीशा से इन दोनों ही घटनाओं की घोषणा पहले से करवा दी।

परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि इन बुरे कार्यों के लिए परमेश्वर और एलीशा निराश थे। क्या इन्हें करने वालों की कोई ज़िम्मेदारी थी (देखें आमोस 1:3-5)। पहले एक पाठ में मैंने लिखा था कि मैं कालांतर में किसी के किए गए काम को उस व्यक्ति की स्वेच्छा से वे हस्तक्षेप के ज्ञान के बिना जान सकता था। इसी प्रकार से सर्वज्ञानी परमेश्वर पहले से जान सकता है कि कोई व्यक्ति क्या करने वाला है बिना उसकी इच्छा में हस्तक्षेप किए।

एलीशा और हजाएल के एक दूसरे के सामने खड़े होकर एक दूसरे को देखना, ऐसा दृश्य जिसे हजाएल नबी के मन में से इस्राएलियों को दिखाना था। वहां पर, ''वह उसकी ओर टकटकी बान्ध कर देखता रहा, यहां तक कि वह लज्जित हुआ। और परमेश्वर का भक्त रोने लगा'' (8:11ख)। हजाएल ने पूछा, ''तब हजाएल ने पूछा, मेरा प्रभु क्यों रोता है?'' (8:12क)। एलीशा ने उत्तर दिया, ''इसलिये कि मुझे मालूम है कि तू इस्राएलियों पर क्या क्या उपद्रव करेगा; उनके गढ़वाले नगरों को तू फूंक देगा; उनके जवानों को तू तलवार से घात करेगा, उनके बाल-बच्चों को तू पटक देगा, और उनकी गर्भवती स्त्रियों को तू चीर डालेगा'' (आयत 12ख)। प्राचीन काल के युद्ध में ऐसे अत्याचार ''आम बात'' थे (देखें 2 राजाओं 15:16; होशे 13:16)।[4] इस प्रकार ''हजाएल की तलवार'' (1 राजाओं 19:17) में उन से जिन्होंने यहोवा को छोड़ दिया था खतरनाक बदला लेना था।

हजाएल ने उत्तर दिया, ''तेरा दास जो कुत्ता सरीखा है, वह क्या है कि ऐसा बड़ा काम करे?'' (2 राजाओं 8:13क)। कुछ अनुवादों में इस वचन की व्याख्या हजाएल के यह कहते हुए की गई है कि ''क्या मैं कुत्ता [तुच्छ व्यक्ति] हूं जो ऐसे भयानक काम करे?'' (देखें KJV; NCV)। परन्तु हजाएल ने ''भयानक काम'' नहीं बल्कि ''बड़े काम'' कहा। ''कुत्ता'' शब्द का इस्तेमाल उसने जंगली होने के अर्थ में नहीं बल्कि नग्नय होने के अर्थ में किया। REB में ''पर मैं वह कुत्ता अर्थात नाचीज़ हूं। ...'' अश्शूरी इतिहास हजाएल को ''नाचीज़ का बेटा'' कहता है।[5]

एलीशा ने हां में शायद अपना सिर हिलाया, ''यहोवा ने मुझ पर यह प्रगट किया है कि तू अराम का राजा हो जाएगा'' (8:13ख)।[6] *उस* भविष्यवाणी को सुनकर हजाएल गदगद हुआ होगा।

हजाएल ''एलीशा से विदा होकर अपने स्वामी के पास गया, और उस ने उस से पूछा, एलीशा ने तुझ से क्या कहा?'' (8:14क) ''क्या बेन्हदद जो रोगी है वह बचेगा कि नहीं?'' (8:8)। सवाल के लिए एक अर्थ में नबी का उत्तर था कि ''हां और नहीं''-परन्तु हजाएल ने राजा को उत्तर का केवल ''हां'' वाला भाग ही दिया: ''उस ने मुझ से कहा कि बेनहदद निंसन्देह बचेगा'' (8:14ख)।

एलीशा के उत्तर का ''नहीं'' वाला भाग अगले दिन हुआ होगा: ''दूसरे दिन उस [हजाएल] ने राजाई को लेकर जल से भिगो दिया, और उसको उस [राजा] के मुंह पर ऐसा ओढ़ा दिया कि वह [दम घुटकर] मर गया'' (8:15क)। अनुवादित शब्द ''राजाई'' किसी रद्दी पकड़े के लिए है। इसका अर्थ राजा के बिस्तर पर पड़ा कम्बल (NCV) या फर्स पर पड़ा मैट भी हो सकता है। हत्या के इस ढंग का इस्तेमाल अजाएल ने शायद यह दिखाने के लिए किया कि राजा प्राकृतिक मृत्यु मरा था। बेन्हदद की मृत्यु के बाद बेशक दमिश्क में सप्ताह संघर्ष हुआ परन्तु अन्त में एलीशा की बात सच्ची साबित हुई: ''तब हजाएल उसके स्थान पर राज्य करने लगा'' (8:15ख)।

हजाएल ... अराम का शक्तिशाली राजा था (लगभग 843–796/7 ई.पू.)।''[7] क्या उसने वही काम किए थे जो एलीशा ने पहले बताए थे? हां। अध्याय 8 में आगे हम उसे इस्राएल के राजा के विरुद्ध लड़ते देखते हैं (8:28; देखें 9:14)। 10:32 में हम पढ़ते हैं, ''उन दिनों यहोवा इस्राएल की सीमा को घटाने लगा। इसलिए हजाएल ने इस्राएल के उन सारे देशों में उन को मारा।'' कम से कम एक अवसर पर हजाएल यहूदा के दक्षिणी राज्य में भी अपनी सेनाएं ले गया (12:17, 18)।

2 राजाओं 13 में हमें ये संक्षिप्त कथन मिलते हैं: ''इसलिए यहोवा का क्रोध इस्राएलियों के विरुद्ध भड़क उठा और उस ने उन को अराम के राजा हजाएल ... के अधीन कर दिया''; ''... जीवन भर अराम का राजा हजाएल इस्राएल पर अंधेर ही करता रहा'' (आयतें 3, 22)। परमेश्वर के लोगों ने परमेश्वर के साथ अपनी वाचा पूरी नहीं की थी, और इसके परिणाम भयंकर थे।

येहू की तलवार

परमेश्वर ने एलिय्याह को न केवल अजाएल का अभिषेक करने बल्कि ''इस्राएल पर राजा'' के रूप में ''राजा होने को निमशी के पोते येहू का'' अभिषेक करने को भी कहा था (1 राजाओं 19:16)। यहोवा ने कहा था कि ''जो कोई हजाएल की तलवार से बच जाए उसको येहू मार डालेगा।'' अपनी ''तलवार'' से (1 राजाओं 19:17)। हजाएल ने बाहर से पापी देश को दण्ड दिया जबकि येहू ने भीतर से पापी लोगों को दण्ड देना था। येहू का अभिषेक करने की ज़िम्मेदारी एलीशा को दी गई और इस कार्य को करने का समय आ गया था।

2 राजाओं 8 का अन्तिम भाग यहूदा के दक्षिणी राज्य में यहोराम के शासन का संक्षिप्त विवरण देता है (8:16–23)। यहोराम के मरने के बाद उसका बेटा अहज्याह राजा बना (8:24–27)। यहूदा का राजा बनने पर अहज्याह ने दक्षिणी राज्य में बाल की पूरा आरम्भ करवाई (देखें 8:26, 27; 11:18)। इसके कुछ देर बाद वह और उसका चाचा इस्राएल का राजा योराम गिलाद के रामोत में हजाएल के साथ लड़ने गए (8:28; देखें 9:14ख), जो यरदन के पूर्वी ओर इस्राएल का किला था (*एलीशा के समय में इस्राएल और आस पास के देश* पर मानचित्र देखें)। युद्ध के दौरान योराम घायल हो गया (8:28)।

योराम की टुकड़ियां गिलाद के रामोत में रहीं (देखें 9:1–4), जबकि राजा को स्वस्थ होने के लिए यिज्रेल में उसके सर्दियों के महल में ले जाया गया (*एलीशा के समय में इस्राएल और आस पास के देश पर* मानचित्र देखें) (8:29क)। (शायद वह यिज्रेल में इसलिए गया क्योंकि उसकी मां इजेबेल वहां थी [देखें 9:30]; हम में से अधिकतर लोगों को बीमार होने पर मां द्वारा की जाने वाली देखभाल अच्छी लगती है।) उसके थोड़ी देर बाद ही अहज्याह योराम को देखने के लिए यिज्रेल में आया (8:29ख)। इस प्रकार योराम और अहज्याह दोनों को दण्ड देने के लिए मंच तैयार हो चुका था (देखें 2 इतिहास 22:6, 7)।

अध्याय 9 का आरम्भ येहू के अभिषेक के साथ होता है। उस वचन को देखने से पहले कुछ पृष्ठभूमि जानना सही रहेगा। 9:25 में वहीं से हमें पता चलता है कि एलिय्याह के अहाब और उसके घराने को श्राप दिए जाने के समय नाबोत की बारी येहू अहाब के साथ ही था। उस अवसर पर यहोवा ने एलिय्याह से कहा था:

> शोमरोन में रहनेवाले इस्राएल के राजा अहाब से मिलने को जा; वह तो नाबोत की दाख की बारी में है, उसे अपने अधिकार में लेने को वह वहां गया है। और उस से यह कहना, कि यहोवा यों कहता है, कि क्या तू ने घात किया, और अधिकारी भी बन बैठा? फिर तू उस से यह भी कहना, कि यहोवा यों कहता है, कि जिस स्थान पर कुत्तों ने नाबोत का लोहू चाटा, उसी स्थान पर कुत्ते तेरा भी लोहू चाटेंगे (1 राजाओं 21:18, 19)।

एलिय्याह के दाख की बार में पहुंचने पर अहाब येहू तथा और एक अधिकारी के साथ अपनी नई सम्पत्ति की समीक्षा कर रहा था (2 राजाओं 9:25)। जब राजा ने एलिय्याह को देखा, तो कहा, ''हे मेरे शत्रु! क्या तू ने मेरा पता लगाया है?'' (1 राजाओं 21:20 क)। एलिय्याह ने उत्तर दिया:

> हां, लगाया तो है; और इसका कारण यह है, कि जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, उसे करने के लिए तूने अपने को बेच डाला है। मैं तुझ पर ऐसी विष डालूंगा, कि तुझे पूरी रीति से मिटा डालूंगा; और अहाब के घर के एक एक लड़के को और क्या बन्धुए, क्या स्वाधीन इस्राएल में हर एक रहनेवाले को भी नाश कर डालूंगा। और मैं तेरा घराना नबात के पुत्र यारोबाम [1 राजाओं 15:28-30], और अहिय्याह के पुत्र बाशा [देखें 1 राजाओं 16:8-12] का सा कर दूंगा; इसलिए कि तू ने मुझे क्रोधित किया है, और इस्राएल से पाप करवाया है। और ईज़ेबेल के विषय में यहोवा यह कहता है, कि यिज्रेल के किले के पास कुत्ते ईज़ेबेल को खा डालेंगे (1 राजाओं 21:20ब-23)।

इस भयानक भविष्यवाणी पर अहाब की प्रतिक्रिया से इसका पूरा होना टल गया (1 राजाओं 21:27-29) परन्तु रद्द नहीं हुआ।

अहाब की मृत्यु के बाद येहू ने अहाब के पुत्र योराम की सेवा की और अहाब की मृत्यु के बाद येहू ने अहाब के पुत्र योराम की सेवा की और अधिकार की स्थिति तक पहुंच गया। वह सम्भवतया इस्राएल की सेनाओं का घमण्ड था (देखें 2 राजाओं 9:5; NIV)। 2 राजाओं 9 के आरम्भ में उसके पास हजाएल के विरुद्ध लड़ रही (9:14) गिलाद के रामोत में अपनी सेना थी (9:1, 2)।

येहू का अभिषेक किया जाना था परन्तु इस कार्य को करने के लिए एलीशा स्वयं गेलात के रामोत में नहीं गया। सुझाव दिया गया है कि वह इतना बूढ़ा था कि चल फिर नहीं सकता था, परन्तु पिछली आयतों में वह केवल चालीस से पचास के भीतर था। अधिक सम्भावना यही है इसलिए उसने ''भविष्यवक्ताओं के चेलों में से एक को'' भेजा (9:1-3)। शायद यही वह चेला था जिसे गेहजी की जगह लगाया गया था।[8]

जवान ने येहू को ढूंढ़ा, उसे अन्य सैनिक अगुओं से अलग किया और उसके सिर पर तेल उण्डेला (9:4-6क)। यहोवा के प्रतिनिधि के द्वारा इस्राएल (उत्तरी राज्य) के राजा के अभिषेक का उल्लेख पवित्र शास्त्र में केवल यहीं मिलता है। फिर भविष्यवक्ताओं के चेले ने येहू को यह भयानक आज्ञा दी:

> इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, मैं अपनी प्रजा इस्राएल पर राजा होने के लिये तेरा अभिषेक कर देता हूं। तो तू अपने स्वामी अहाब के घराने को मार डालना, जिस से मुझे अपने दास भविष्यवक्ताओं के वरन अपने सब दासों के खून का जो ईज़ेबेल ने बहाया, पलटा मिले। क्योंकि अहाब का समस्त घराना नाश हो जाएगा, और मैं अहाब के वंश के हर लड़के को और इस्राएल में के क्या बन्धुए, क्या स्वाधीन, हर एक को नाश कर डालूंगा। ... और ईज़ेबेल को यिज़्रैल की भूमि में कुत्ते खाएंगे, और उसको मिट्टी देने वाला कोई न होगा (9:6ख-10क)।

जब येहू अपने साथी अधिकारियों के पास लौट आया तो उन्हें आश्चर्य हुआ कि इस आदमी का उद्देश्य क्या है। पहले तो येहू ने उनके सवालों को टाल दिया पर अन्त में मान लिया ''उस ने मुझ से कहा तो बहुत, परन्तु मतलब यह है कि यहोवा यों कहता है कि मैं इस्राएल का राजा होने के लिये तेरा अभिषेक कर देता हूं'' (9:12ख)। अन्य अगुवों ने बड़े जोश के साथ सेनापति को अपना नया हाकिम स्वीकार कर लिया। बिगुल बजाया गया और वे पुकार उठे, ''येहू राजा है!'' (9:13ख)। येहू ने उन्हें नगर में रहने का आदेश दिया ताकि योराम खबरदार न हो (9:15ख)। फिर वह अपने रथ पर बैठा और पश्चिम की ओर चल दिया (देखें 9:20ख), यिज़्रेल में पैंतालीस से पचास मील गया (9:16)।

येहू और उसके साथियों के यिज़्रेल के निकट पहुंचने पर एक घुड़सवार को उनसे भेंट के लिए भेजा गया (9:17)। शायद यह पूछने के लिए कि लड़ाई कैसी चल रही है। येहू ने अपने साथ एक और दूत को ले लिया और आगे बढ़ गया (9:18)। एक दूसरा घुड़सवार भेजा गया, उसके साथ भी यही हुआ (9:19, 20)। अन्त में राजा योराम और राजा अहज्याह अपने रथों पर स्वार होकर येहू से भेंट करने गए (9:21क)। आयत 21 के अन्त में दी गई टिप्पणी को नज़रअन्दाज़ न करें: ''दोनों अपने अपने रथ पर चढ़कर निकल गए, और येहू से मिलने को बाहर जाकर *यिज़्रैल नाबोत की भूमि में उससे भेंट की*।''

येहू ने एक तीर के साथ योराम को निशाना बनाया (9:24) और अपने अधिकारी बिदकर से कहा:

> ... उसे उठाकर यिज़्रेल नाबोत की भूमि में फेंक दे; स्मरण तो कर, कि जब मैं और तू, हम दोनो एक संग सवार होकर उसके पिता अहाब के पीछे-पीछे चल रहे थे तब यहोवा ने उस से यह भारी वचन कहलवाया था, कि यहोवा की यह वाणी है कि नाबोत और उसके पुत्रों का जो ख़ून हुआ, उसे मैं ने देखा है, और यहोवा की यह वाणी है, कि मैं उसी भूमि में तुझे बदला दूंगा। तो अब यहोवा के उस वचन के अनुसार इसे उठाकर उसी भूमि में फेंक दे (9:25, 26)।

राजा अहज्याह भाग तो गया परन्तु वह घायल था जिस कारण शीघ्र ही उसकी मृत्यु हो गई (9:27, 28)।

येहू के यिज़्रेल में पहुंचने तक बदनाम इज़ेबेल को खबर मिल चुकी थी कि सेनापति ने उसके बेटे को मार डाला है (देखें 9:30क, 31)। उसने ''अपनी आंखों में सुर्मा लगा, अपना

सिर संवार लिया'' (9:30ख)। क्या वह येहू को वासना का शिकार बनाने की उम्मीद लगाए हुए थी? शायद। अब चाहे वह जवान नहीं थी पर फिर भी आकर्षक दिखाई देती थी। अधिक सम्भावना है कि वह ''रानी की तरह मरना'' चाहती होगी। शायद उसने अपनी देह के पड़े होने की कल्पना की जिस पर शोक करने वाले लोग उसकी सुन्दरता पर टिप्पणियां कर रहे थे।

येहू के नगर के फाटक में प्रवेश करने पर उसने महल की खिड़की में से बाहर झांका और आवाज़ दी, ''हे अपने स्वामी के घात करने वाले जिम्री, क्या कुशल है[9]?'' (9:30ग, 31ख)। उसने येहू को ''जिम्री'' कहा क्योंकि वह जिम्री की तरह जिसने पैंतालीस साल पहले ऐसा किया था घात करके सिंहासन पर कब्जा कर रहा था (देखें 1 राजाओं 16:8-10)। उसके शब्दों में शायद अशुभ संकेत था कि जिम्री ने अपना ही प्राण लेने से पूर्व केवल सात दिन तक शासन किया था (9:15)।

अब तक महल की खिड़कियों में चेहरे दिखाई देने लगे थे। येहू चिल्लाया ''मेरी ओर कौन है? कौन?'' (9:32क)। दो तीन सहमे हुए अधिकारियों ने हां में सिर हिलाया (9:32ख)। येहू ने उन्हें आदेश दिया, ''उसे नीचे गिरा दो'' (9:33क)। फिर हमें एक खतरनाक दृश्य मिलता है जिसे बिना टिप्पणी के बड़े शानदार ढंग से दिखाया गया है: ''अत: उन्होंने उसको नीचे गिरा दिया, और उसके लहू के कुछ छीटे दीवार पर और कुछ घोड़ों पर पड़े और [येहू] ने उसको [अपने रथ और घोड़ों के साथ] पांव से लताड़ दिया'' (9:33ख)।

कोई विरोध करने वाला न होने के कारण येहू ने महल पर कब्जा कर लिया और नये राजा के रूप में अपना पहला भोजन खाने के लिए बैठ गया (9:34क)। भोजन ने अवश्य उसे कुछ कोमल किया होगा क्योंकि उसने निर्णय लिया कि अपनी शैतानी चालों के बावजूद इज़ेबेल को सही ढंग से दफ़नाया जाए।[10] उसने अपने सहायकों से कहा, ''जाओ उस स्रापित स्त्री को देख लो, और उसे मिट्टी दो; वह तो राजा की बेटी है'' (9:34ख)। इज़ेबेल सिदोनियों के राजा की बेटी (1 राजाओं 16:31) और कहने की आवश्यकता नहीं कि वह एक राजा की पत्नी और राजाओं की मां और दादी थी।

परन्तु जब वे इज़ेबेल को दफ़नाने के लिए गए, ''तब उसकी खोपड़ी पांवों और हथेलियों को छोड़कर उसका और कुछ न पाया'' (2 राजाओं 9:35), क्योंकि बाकी कुत्तों ने खा लिया था। किसी ने कहा है कि उस दिन उन जंगली जीवों ने मुर्दा रानी को ऐसे फुर्ती से खाया जैसे मुर्दा हिरण को खाते हैं। जब सेवकों ने बताया कि क्या हुआ है तो येहू ने उस त्रास्दी में एलिय्याह की भविष्यवाणी को पूरा होते देखा:

> ... यह यहोवा का वह वचन है, जो उस ने अपने दास तिशबी एलिय्याह से कहलवाया था, कि ईज़ेबेल का मांस यिज़्रैल की भूमि में कुत्तों से खाया जाएगा। और ईज़ेबेल की लोथ यिज़्रेल की भूमि पर खाद की नाईं पड़ी रहेगी, यहां तक कि कोई न कहेगा, यह ईज़ेबेल है (9:36, 37)।

ईज़ेबेल को कठोर ढंग का पता चला कि ''सुन्दरता सदा नहीं रहती'' (नीतिवचन 31:30; LB)। उसकी देह इस स्थिति में नहीं रहनी थी कि शोक करने वाले उसकी सुन्दरता को निहार सकें बल्कि उसकी देह किसी भी स्थिति में नहीं रहनी थी।

इस प्रकार से येहू का शासन आरम्भ हुआ जो 28 साल (10:36) तक चला। अध्याय 10 बताता है कि येहू ने अहाब की संतान को मारने और बाल के पुजारियों का खात्मा करने के अपने मिशन को कैसे पूरा किया। इसे सुधारवादी सर्जरी के रूप में देखें जिसमें इस उम्मीद से कि शरीर स्वस्थ रहे बीमारी के हर निशान को निकाल दिया जाता है।

सच्चाई के चार कथन

हजाएल और येहू की कहानी खून से सनी भयंकर कहानी है। इससे हम क्या सबक ले सकते हैं? मैं चार सच्चाइयों का सुझाव देता हूं जिन्हें हमें दिल में बिठा लेना चाहिए।

1. नियन्त्रण परमेश्वर के हाथ में है।

यदि मैं और आप हजाएल और येहू के शांत दिनों में रह रहे होते तो हो सकता है कि हम चकित होते कि "परमेश्वर ऐसा क्यों होने दे रहा है।" 2 राजाओं 8-10 में हमें पता चलता है कि परिस्थिति पर नियन्त्रण खोने के बजाय परमेश्वर ने पूरी तरह से नियन्त्रण अपने हाथ में रखा। हजाएल और येहू चाहे कितने भी दुष्ट थे पर उसने उन्हें न्याय के साधनों के रूप में इस्तेमाल किया।

अस्त-व्यस्तता से गिरे होने पर कारण या उद्देश्य को देख पाना कठिन होगा। ऐसे समयों में यह याद किया जाना अच्छा है कि "परमेश्वर जाति जाति पर राज करता है" (भजन संहिता 47:8क; देखें 22:28)। वह जातियों को बड़े भी बना सकता है और उन्हें नष्ट भी कर सकता है (अय्यूब 12:23); वह राष्ट्रीय अगुओं की सलाह को नकारकर उनकी योजनाओं को गड़बड़ा सकता है (भजन संहिता 33:10)। सबसे बढ़कर हमें उस उद्देश्य के साथ जुड़े रहना आवश्यक है, चाहे जीवन में कितनी भी कठिनाई क्यों न आए, "परमेश्वर उन लोगों के लिए जो उससे प्रेम रखते हैं, सब बातों को मिलाकर भलाई ही उत्पन्न कराता है; अर्थात उन्हीं के लिए जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं" (रोमियों 8:28)।

मैं यह नहीं कह रहा हूं कि हमें हर बार इस बात की समझ आ जाती है कि जो कुछ हो रहा है वह क्यों हो रहा है, पर इससे हमें यह याद करने में सहायता मिलती है कि परमेश्वर बुराई से भी भलाई को निकाल सकता है। देखकर चलने के बजाय विश्वास पर चलना आसान नहीं है (देखें 2 कुरिन्थियों 5:7), परन्तु परमेश्वर अभी भी सिंहासन पर है यानी नियन्त्रण उसी के हाथ में है।

2. परमेश्वर का वचन पक्का है।

एक सबक जो पवित्र आत्मा सब पाठकों को सिखाना चाहता था वह यह है कि परमेश्वर का वचन पक्का है। 2 राजाओं 8-10 में बार बार यह ध्यान दिलाया गया है कि परमेश्वर का वचन पूरा हुआ। परमेश्वर के नबी एलीशा ने भविष्यवाणी की थी कि बेन्हदद मर जाएगा (8:10), और वह मर गया (8:15)। एलीशा ने प्रतिज्ञा की कि हजाएल अराम का राजा बनेगा (8:13), और वह बना (8:15)। एलीशा ने हजाएल के इस्राएल के दमन की बात बताई (8:12) और बिल्कुल वैसे हुआ जैसे नबी ने भविष्यवाणी की थी (देखें 10:32, 33; 13:3,

22)। एलिय्याह ने कहा कि नाबोद के लहू का बदला दाख की उसी बारी में लिया जाएगा जहां उसका खून किया गया था (1 राजाओं 21:19), और ऐसा ही हुआ (2 राजाओं 9:21, 25, 26)। एलिय्याह ने अहाब को बताया था कि उसके वंश के सब लोग नष्ट किए जाएंगे (1 राजाओं 21:21) और यह भविष्यवाणी पूरी हुई (2 राजाओं 10:17)।

बेशक यह कहने के समय येहू का उद्देश्य गुप्त था, पर उसने यह कहकर कि ''जो यहोवा ने ... कहा उसमें से एक भी बात बिना पूरी हुए न रही'' (2 राजाओं 10:10)। टिप्पणी में ''भूमि पर गिरेगी'' का अर्थ ''नष्ट'' या ''खत्म होना'' था। NIV में है ''यहोवा की कही बात खाली नहीं जाएगी।''

2 राजाओं 8-10 यह स्पष्ट करता है कि जब यहोवा कहता है कि कोई बात होगी तो यह हो ही जाएगी। परमेश्वर के वचन के विरुद्ध हर बुराई की चाल के बावजूद परमेश्वर के वचन का पूरा होना निश्चित है। दुष्ट लोग रोएंगे क्योंकि यह सच है (देखें मत्ती 7:13, 14; 1 कुरिन्थियों 6:9, 10; 16:22; गलातियों 5:19-21)। भक्त लोग आनन्द करेंगे क्योंकि यह पक्का है (देखें यशायाह 1:18; यूहन्ना 14:1-3; 1 यूहन्ना 1:7; 3:2)।

3. पाप के परिणाम भयंकर हैं।

2 राजाओं 8-10 का चौंकाने वाला संदेश है कि पाप के परिणाम भयंकर होते हैं। आज्ञा न मानने के पथ को शैतान इतना आकर्षित दिखाता है परन्तु अन्त में ''विश्वासघातियों का मार्ग कड़ा होता है'' (नीतिवचन 13:15; KJV)। ''ऐसा भी मार्ग है, जो मनुष्य को सीधा देख पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है'' (नीतिवचन 16:25)। विवेकी लोगों ने गलातियों 6:7, 8क की सच्चाई जानी है: ''मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा। क्योंकि जो अपने शरीर के लिए बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा।''

समय समय पर न केवल पापियों को बल्कि अन्य लोगों को भी परमेश्वर ने लोगों के मनों पर इस तथ्य का प्रभाव डालने के स्पष्ट सबक दिए हैं कि पाप के भयंकर परिणाम होते हैं। उस प्रलय के बारे में सोचें, जिससे लाखों भागी लोग और उनके परिवारों का सफ़ाया हो गया था। सदोम और अमोरा के विनाश पर विचार करें, जो इतनी बड़ी तबाही थी कि उसमें दो नगरों का नामो-निशान मिट गया। मिस्र के पहलौठे नरों की मृत्यु और लाल समुद्र में इस्राएलियों का पीछा करने वाले मिस्री सिपाहियों के अन्त पर विचार करें। हजायल द्वारा इस्राएल को दिया गया दण्ड और येहू द्वारा अहाब के परिवार और बाल के पुजारियों के विनाश और याद दिलाने वाले हैं कि परमेश्वर आज्ञा तोड़े जाने को हल्के से नहीं लेता।

2 राजाओं 8-10 से हमें अपने मनों और जीवनों की जांच करनी चाहिए। यदि हमें वहां पाप और विद्रोह मिले तो हमें तुरन्त मन फिराकर परमेश्वर के पास लौट आना चाहिए!

4. हमारे मनों को छुआ जाना चाहिए।

चौथी सच्चाई हमें हमारे पाठ के विषय पर ले आती है: ''आदमी जो रोया।'' सदियों तक इस्राएल ने परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया था। उन्होंने यहोवा को त्याग दिया था और अन्य ''देवताओं'' के पीछे चले गए थे। लगता नहीं था कि उनकी दुष्टता का कोई अन्त हो। जब यहोवा

ने उन्हें वापस बुलाने के लिए नबियों को भेजा तो उन्होंने परमेश्वर के दूतों का ठट्ठा उड़ाया औन उन में से कइयों को मार डाला। उन्हें कठोर से कठोर दण्ड मिले थे। तौभी जब एलीशा को उनके भविष्य का पता चला (8:12) तो उसने आनन्दित होकर नहीं कहा, ''समय आ गया है! उन्हें वही मिलेगा जिसके वे हकदार हैं।'' बल्कि ''परमेश्वर का भक्त रोने लगा'' (8:11)।

एक पल पहले मैंने पाप के परिणामों की बात की। उनमें से कुछ परिणाम इस संसार में हैं (देखें रोमियों 1:27ख); उनमें से अधिकतर आने वाले संसार में होंगे (प्रकाशितवाक्य 20:11-15)। जब हम दुष्टों को ''वही काटते जो उन्होंने बोया होता है'' देखते हैं (देखें गलातियों 6:7, 9), या आज्ञा न मानने के सनातन दण्ड के बारे में पढ़ते हैं (मत्ती 7:21-23; 8:12; मरकुस 9:47, 48; प्रकाशितवाक्य 21:8), तो हमारी प्रतिक्रिया क्या होगी? क्या हम प्रसन्न होते हैं या दुखी होते हैं? यदि एलीशा इस्राएलियों की थोड़ी देर के लिए मिलने वाले दण्ड पर विचार करके रोया तो हमें प्रतिदिन मिलने वाले लोगों के सनातन दण्ड पर ध्यान करके कितना अधिक रोना चाहिए!

एक कलीसिया में प्रचारक नहीं था। उन्होंने कई लोगों को आकर प्रचार करने के लिए निमन्त्रण दिया। एक रविवार एक आदमी आया और वह नरक पर प्रचार करने लगा। अगले रविवार एक और आया और उसका संदेश भी नरक पर ही था। उन्होंने दूसरे आदमी को अपने साथ काम करने के लिए कहने का निर्णय लिया। बाद में किसी ने उनसे पूछा कि उन्होंने उसे क्यों चुना है। उनका कहना था, ''पहले वाले प्रचारक ने कहा था कि लोग नरक की ओर जा रहे हैं, और उसने बड़े आनन्द से यह बात कही। दूसरे प्रचारक ने कहा कि लोग नरक की ओर जा रहे हैं और यह कहते हुए वह दुखी था। हम सभी को दूसरे वाला प्रचारक चाहिए।''

कहीं पर मैंने भाषण का शीर्षक देखा था: ''नरक की ओर जाते संसार में सूखी आंखों वाली कलीसिया।'' क्या यह हो सकता है कि हम अपने आस पास के लोगों को नरक में जाते देख सकें और कुछ करना न चाहें? जब यीशु ने यरूशलेम को देखा अर्थात उस नगर को जिसने उसे ठुकरा दिया था, वही नगर जिसने उसे क्रूस पर दिया था, पर यह वह नगर भी था जिसे नष्ट होना था, तो वह रोया (लूका 19:41-44; देखें मत्ती 23:37, 38)। कुरिन्थुस की कलीसिया, जिसमें हर प्रकार की समस्या थी जिसकी कल्पना की जा सकती है, को लिखते हुए पौलुस रोया (2 कुरिन्थियों 2:4)। उसने उन से पूछा, ''किस के ठोकर खाने से मेरा जी नहीं दुखता?'' (2 कुरिन्थियों 11:29ख)।

क्या हमें उनकी चिंता है जो खोए हुए हैं? यदि हम सचमुच में परवाह करते हैं तो हम बहाने बनाना छोड़कर दूसरों को सुसमाचार बताना आरम्भ करेंगे। उनकी एकमात्र आशा केवल यही है (रोमियों 1:16)!

सारांश

त्रासदी की घटना में सबसे बड़ी त्रास्दी तब होती है जब उससे कोई सबक नहीं लिया जाता, जब कोई सुधार नहीं किया जाता। 2 राजाओं 8-10 की त्रासदियों से हमने चार मूल सच्चाइयां निकाली हैं: (1) *नियन्त्रण परमेश्वर के हाथ में है:* हमें शांत होना चाहिए, (2) *परमेश्वर का वचन पक्का है:* हम आश्वस्त हो सकते हैं, (3) *पाप के परिणाम भयंकर हैं:* हमें चौकस होना

आवश्यक है और (4) *हमारे मनों को छुआ जाना चाहिए:* हमें परवाह करनी चाहिए।

अब सवाल यह है कि क्या हम इन सच्चाइयों से सीख ले सकते हैं। इससे भी महत्वपूर्ण बात है कि उसके परिणामस्वरूप क्या हमारे जीवनों में सुधार आएगा?

टिप्पणियां

[1]कुछ प्राचीन हस्तलेखों में ''तू निश्चय बच *नहीं* सकेगा,'' परन्तु ''तू निश्चय बच सकता है'' ''को प्राथमिकता दी जाए'' (जे. रॉबर्ट वेनॉय, 2 किंग्स, *दि NIV स्टडी बाइबल,* संपा. केन्नथ बार्कर [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1985], 537)। [2]जेम्स बर्टन कॉफमैन एंड थेलमा बी. कॉफमैन, *कमैंट्री ऑन सेकंड किंग्स*, जेम्स बर्टन कॉफमैन कमैंट्रीज़, दि हिस्ट्रोकिल बुक्स, अंक. 6 (अबिलेन, टैक्सस: ए.सी.यू. प्रैस, 1992), 100–102. [3]वारेन डब्ल्यू. विर्यसबे, *बी. डिस्टिंक्ट* (कोलोराडो स्प्रिंग्स, कोलोराडो: विक्टर, 2002), 61. [4]कॉफमैन ने जोड़ा कि ''आज भी, 'दयालु' युद्ध जैसी कोई बात नहीं है'' (कॉफमैन, 103)। [5]डोनल्ड जे. वाइसमैन, *1 और 2 किंग्स: एन इंट्रोडक्शन ऑन कमैंट्री,* टिंडेल ओल्ड टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इनिलोइस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1993), 214. [6]कइयों का मानना है कि यहां पर एलीशा ने तेल के साथ हजाएल का अभिषेक किया; परन्तु ऐसा कोई संकेत नहीं है कि कोई ऐसा समारोह हुआ हो। हजाएल का ''अभिषेक'' सम्भवतया ऐसा था जिसे एलीशा ने यहोवा के उद्देश्य की पूर्ति के लिए (वचन या कार्य से) ''अलग होना'' पाया। [7]वाइसमैन, 214. [8]''रब्बियों की सजावट जिसे बहुत कम परम्परा माना जाता है [सेवक] को 'योना, अमित्तेह के पुत्र' बनाती है'' (जी. रॉलिंसन, ''2 किंग्स,'' *दि पुलपिट कमैंट्री,* अंक 5, *1 और 2 किंग्स,* संपा. एच. डी. एम. स्पेंस एंड जोसेफ एस. एक्सेल [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1950], 188)। [9]कई लोग ''क्या कुशल है'' (*शालोम*) शब्दों में मेल मिलाप के प्रयास को देखते हैं, परन्तु अगले शब्दों से यह सुझाव मिलता है कि यह सवाल व्यंग्य के इरादे से किया गया था। [10]क्या उसे भूल गया होगा कि नबी के चेले ने कहा था कि ईजेबेल को मिट्टी नहीं मिलेगी? (देखें 2 राजाओं 9:10)।